शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.877 (SJIF)

पर्यटन का औद्योगिक स्वरूप

प्राप्तिः 20.06.2024
स्वीकृतः 26.06.2024

55

डॉ० कमलेश बैरवा
श्री मीनेष पी०जी० महाविद्यालय
जमवारामगढ, जयपुर
ईमेलः *dr.kamleshberwa@gmail.com*

सारांश

पर्यटन विश्वजनीन आर्थिक परिवहन से सीधे जुड़ गया है। वास्वत में तो किसी एक राष्ट्र के विकास में पर्यटन न केवल महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है बल्कि विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में सांस्कृतिक परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। राष्ट्रों के आर्थिक क्षेत्र में महत्व, विदेशी मुद्रा अर्जित करने में योगदान एवं रोजगार के विभिन्न स्त्रोत उत्पन्न करने में पर्यटन का अपना एक योगदान है। पर्यटन भारतीय परम्परा का आरंभ से ही हिस्सा रहा है, भारत जैसे बहुभाषी विविध संस्कृति व ऐतिहासिक सांस्कृतिक धरोहर वाले देश में पर्यटन एक महत्वपूर्ण घटक है जिसके आधार पर देश के आर्थिक विकास को गति प्रदान की जा सकती है पर्यटन के साथ सभी क्षेत्रों का विकास होता है, यदि पर्यटन को औद्योगिक स्वरूप प्रदान किया जाता है तो यह देश के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

मुख्य बिन्दु

पर्यटन की अवधारणा, पर्यटन का महत्व, पर्यटन का अर्थव्यवस्था में योगदान।

पर्यटन विश्वजनीन आर्थिक परिवहन से सीधे जुड़ गया है। वास्वत में तो किसी एक राष्ट्र के विकास में पर्यटन न केवल महत्वपूर्ण आर्थिक क्रिया है बल्कि विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में सांस्कृतिक परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है। राष्ट्रों के आर्थिक क्षेत्र में महत्व, विदेशी मुद्रा अर्जित करने में योगदान एवं रोजगार के विभिन्न स्त्रोत उत्पन्न करने में पर्यटन का अपना एक योगदान है। पर्यटन भारतीय परम्परा का आरंभ से ही हिस्सा रहा है और अनौपचारिक रूप से एक उद्योग के रूप में भी चलता रहा है। पुराने समय में पर्यटन केवल अनौपचारिक क्षेत्र का हिस्सा था परन्तु फिर भी उस समय सरायों, धर्मशालाओं और हवेलियों के रूप में यात्रियों के लिए सुविधाएं मौजूद थी। बाद में देश में आने वाले विदेशी सैलानियों की जरूरतों को देखते हुए बीसवीं शताब्दी में पर्यटन एक उद्योग के रूप में विकसित होने लगा।[1]

वर्तमान में पर्यटन उद्योग

पर्यटन उद्योग वर्तमान में विश्व की सबसे बड़ी आर्थिक गतिविधि है जिसका सालाना कोरोबार साढ़े तीन अरब डालर है, यहां यह भी उल्लेखनीय है कि भारत की गिनती उन थोड़े ही

देशों में होती है जहां लगभग 5000 वर्ष तक की सभ्यता का निर्बाध विकास हुआ है और इसी का परिणाम है कि पर्यटन जैसी संभावनाएं यहां पैदा हुई है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। वैसे भी पर्यटन का मुख्य आयाम विविधता है और भारत तो ऐसी प्राकृतिक विविधताओं से भरा पडा है, जो हर रूचि के पर्यटक को आकर्शित करने में सक्षम है। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक भिन्न–भिन्न जलवायु व विभिन्न प्रकार के निवासियों की कला–संस्कृति के नजारे अनायास ही नए आगन्तुकों को मोह लेते है। पर्यटन के लिए भारत विस्तृत क्षेत्र है, इस रूप में भी यहां की विभिन्न संस्कृतियों व प्राकृतिक आकर्षण पर्यटन उद्योग के मुख्य स्त्रोत है हिमाच्छादित पहाड़ियां, हिमखण्ड़, गर्म जल के फव्वारें, गुफाएं, मुख्य झीलें, सुन्दर समुद्र तट व आकर्षण युक्त पर्वतमालाएं, रोमांचक वन्य प्राणी, मनभावने यात्रास्थल आदि के बीच 5 हजार वर्ष पुरानी हमारी सभ्यता व संस्कृति आज भी जीवंत है। कहीं दूर तक लहराता रेत का समुन्दर तो कहीं ऐतिहासिक इमारतें, अपने–आप में कलात्मकता के लिए बेजोड़ है। इसके अलावा खान–पान एवं त्योहारों के लिए भी भारत देश आकर्षण का अद्भुत केन्द्र हैं। सकारात्मक पर्यटक वह व्यक्ति होता है जो 24 घंटे से अधिक अपने देश, प्रदेश से दूसरे देश, प्रदेशों में बिताता है तथा छः माह से अधिक नहीं रहता है। उसका उद्देश्य वैधानिक अप्रवासी मनोरंजन, नैसर्गिक आनन्द, खेलकूद, स्वास्थ्य, अध्ययन, धार्मिक यात्रा, व्यापार, कार्यालय कार्य, सम्मेलन, अभियान, मिशन, फोटोग्राफी, शूटिंग, फिल्म शूटिंग, पारिवारिक कार्य आदि होते है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की गई यात्रा पर्यटन कहलाती है। पर्यटन में खेलकूद, शैक्षणिक भ्रमण, धार्मिक दृष्टिकोण, राजनैतिक एवं कूटनीतिक दृष्टिकोण आदि से की गई यात्रा भी, जिसमें व्यक्ति या समूह ने परिवहन, होटल रेस्तरां, वीजा, पासपोर्ट, यात्रा पंजीकरण आदि कराकर उसका उपभोग किया है, वह यात्रा पर्यटन में सम्मिलित की जाती है।[2]

पर्यटन की अवधारणा को देश की सामाजिक शिक्षा एवं सामाजिक गतिशीलता का माध्यम समझने तथा पर्यटन के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान के लोगों में पारस्परिक अच्छे संबंध स्थापित करने, घनिष्ठ सांस्कृतिक एवं व्यापारिक संबंध बनाने तथा विश्वशांति स्थापित करने का यह उचित समय है। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन का पूर्व प्रभाव केवल पर्यटन व्यापार के अग्रगामी सीमा पर व्यय करने से प्राप्त नहीं होता है। इसमें उन समस्त उद्योगों को सम्मिलित किया जाता है जो विभिन्न स्तरों पर माल और सेवाओं की पूर्ति करने के लिए आवश्यक होते है। रिचर्ड्स के अनुसार[2] पर्यटन के व्यय करने एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में दो मुख्य सम्बन्ध है। प्रथम उपभोक्ता से संबंधित वस्तुएं, जिसका प्रत्यक्ष संबंध है और इसके अन्तर्गत पर्यटन के लिए किए गए व्यय जैसे परिवहन, आवास, खान–पान व अन्य क्रम संबंधित खर्चे व सेवाएं है। द्वितीय, पर्यटन से प्रत्यक्ष जुड़े हुए व्यवसाय व उद्योग जो पर्यटन उद्योग की वस्तुओं एवं सेवाओं की पूर्ति करते है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पर्यटन एक व्यापक क्रिया है जिसमें विभिन्न सेवाओं के साथ–साथ मनुष्य की आवश्यकताएं भी प्रत्यक्षता से जुड़ी हुई है।

विश्व यात्रा एवं पर्यटन परिषद् का पर्यटन के संदर्भ में यह कहना दरअसल पर्यटन के निरंतर व्यापक होते स्वरूप की ओर इंगित करता है। वस्तुतः आदिकाल से चली आ रही पर्यटन की सोच ने आज एक वृहद् रूप ग्रहण कर लिया है और अब यह एक बिना चिमनी और धुंए का ऐसा

उद्योग बन गया है जिसमें उत्पादन तो कुछ भी नहीं होता, फिर भी आय अर्जित होती है और अनेक लोगों को रोजगार भी प्राप्त होता है।

पर्यटन का महत्व

पर्यटन से न केवल आमोद–प्रमोद, मनारंजन, भ्रमण एवं उद्‌देश्य की पूर्ति होती है, वरन् यह विदेशी मुद्रा अर्जन का साधन, सहयोग एवं उद्‌भव का आधार, रोजगार प्रदान करने वाला उद्योग एवं शैक्षणिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक तथा सामाजिक आदान–प्रदान का भी आधार है। पर्यटन की विभिन्न विधाओं की दृष्टि से अलग–अलग भूमिका है। अतः पर्यटन से आपसी सद्‌भाव, मानसिक स्तर में वृद्धि तथा आर्थिक विकास होता हैं

आर्थिक क्रिया के रूप में पर्यटन

पर्यटन स्वयं में संगठित उद्योग है परन्तु इसकी सीमाएं बहुत विशाल हैं। ये सीमाएं विभिन्न स्थानों पर बिखरी हुई है तथा इसके लाभ राष्ट्र की समस्त जनता को उपलब्ध होते हैं। वे सभी व्यक्ति, जो पर्यटन–स्थानों में निवास करते है, पर्यटन क्रिया में सक्रिय होते है। समस्त पर्यटन, चाहे वह स्वदेशी हो या विदेशी, क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था के लिए रोजगार प्रदान करने में सहायक होते है तथा साथ ही अच्छी संस्कृति को कायम करने का अवसर प्रदान करने है। पीटर एफ ड्रेकर[3] के अनुसार पर्यटन के आर्थिक रूप से पांच मुख्य कार्य होते है। ये पांच कार्य इस प्रकार से है –

(1) व्यापार–संतुलन में योगदान करना एवं मुद्रा अर्जित करने में सहायक।

(2) जिन क्षेत्रों में औद्योगिक विकास नहीं है वहां पर विकास को बढ़ावा देना।

(3) रोजगार के अवसरों में वृद्धि करना।

(4) बहुप्रभाव के माध्यम से सामान्य आर्थिक क्रियाओं में सहयोग करना।

(5) विश्व के कार्यो में लोगों का उत्साह बढ़ाकर सामाजिक लाभ प्रदान करना तथा विदेशी व्यक्तियों व विदेशी वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त करना।[4]

विकसित अर्थव्यवस्था में विकास कार्यों के लिए विदेशी मुद्रा की अति आवश्यकता होती है, परन्तु पर्यटन के आर्थिक लाभों का सही ज्ञान तभी हो सकता है जबकि इसके उत्पादन, रोजगार व कर–आय पर पड़े प्रभावों का अध्ययन किया जाए। आज यह विश्व का उद्योग है, जिसमें बहुत ही अधिक वित्त निवेशित है। आवास, परिवहन, पर्यटन स्थल क्षेत्र तथा सहायक सुविधाएं व सेवाएं, जो कि पर्यटन के मुख्य पहलू हैं, पर किये गये नियोजन से पर्यटन प्रिय राष्ट्रों में बहुत ही उच्च आय प्राप्त होती है।

विदेशी पर्यटकों द्वारा किये गये धन का राष्ट्र की आय पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के तौर पर जब कोई यात्री होटल–बिल का भुगतान करता है तो होटल प्रबंध द्वारा अर्जित किया धन विभिन्न ऋणों के भुगतान या विदेशी पर्यटकों के दूरभाष, कर्मचारी सेवाओं, वस्तुओं एवं अन्य सेवाओं पर व्यय किया जायेगा। जो लोग इस प्रकार होटलों से धन प्राप्त करते है वे अपनी निजी सेवाओं या यात्राओं के लिए भुगतान करते है। यात्रियों द्वारा प्राप्त यह धन दुबारा खर्च किया जाता है तथा अर्थव्यवस्था के विभिन्न भागों में प्रवेश करता रहता है।किसी भी दूसरे

क्षेत्र की तुलना में पर्यटन में निवेश किये गये प्रत्येक रूपये के कारण और अधिक नौकरियां उत्पन्न करता है। यह स्थानीय स्तर पर भी नौकरियां उत्पन्न करता है और जीवकोपार्जन के लिए दूर–दराज के स्थानों तक अप्रवास की आवश्यता के अनुसार फैला हुआ भी है। वास्तव में पर्यटन बड़े स्तर पर रोजगार के अवसरों को बढ़ाने में एक प्रमुख भूमिका अदा करता है।[5] निजी क्षेत्र में पर्यटक सुविधाओं की लगातार वृद्धि उपार्जित करने और उनकी सेवाओं की गुणवत्ता को उच्च स्तर पर सुनिश्चित करना ही आज सरकार का लक्ष्य है। आज पर्यटन को दरअसल उद्योग का दर्जा दिया गया है और केन्द्रीय तथा राज्य सरकार दोनों के ही द्वारा इस क्षेत्र में कई प्रोत्साहन उपलब्ध कराये गये है। एक विदेशी पर्यटक अपने ठहरने की अवधि में औसत 800 रूपये प्रतिदन व्यय करता है। यह अनुमान किया गया है कि प्रत्येक पर्यटन औसतन 2.5 दिनों तक राज्य में रूकता है तथा इस प्रकार राज्य में भ्रमण करने वाले सभी पर्यटक प्रति वर्ष 1 हजार करोड़ रूपये से अधिक का व्यय करते है।[6]

अर्थव्यवस्था में पर्यटन का महत्त्वपूर्ण स्थान

अर्थव्यवस्था के सभी महती घटक, जिनमें रोजगार–जनन, आर्थिक लाभ, जीवन–स्तर में सुधार आदि सम्मिलित है, ये सभी क्रियाएं पर्यटन में होती है तथा राज्य में इस दिशा में पर्यटन उद्योग का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

अर्थव्यवस्था एवं पर्यटन उद्योग

प्रदेश में पर्यटन की परम्परा आरंभ से ही रही है। दरअसल राज्य के चित्ताकर्षक पर्यटन–स्थलों के साथ–साथ धार्मिक आस्था व पवित्रता से पावन यहां के तीर्थस्थलों पर श्रद्धालु वर्ष पर्यन्त आते रहते है। तीर्थाटन के बहाने देशाटन की परम्परा के अन्तर्गत ब्राह्य रूप में तो घूमने और घुमाने की मानसिकता नजर आती है परन्तु इससे किसी स्थान–विशेष की अर्थव्यवस्था में भी बदलाव आता है। जब भी कभी कोई व्यक्ति अपने स्थान से बाहर कही सैर करने जाता है तो निश्चित रूप से जहां वह जाता है वहां पर भोजन, आवास व खरीददारी के रूप में कुछ न कुछ खर्च करता है। यह खर्च उस स्थान के लोगों के लिए, वहां पर उन चीजों का व्यवसाय करने वालों की आयु–वृद्धि में सीधे सहायक होता है।

इन पर्यटकों द्वारा अपने आवास, खान–पान, परिवहन आदि की व्यवस्था के अन्तर्गत जो भी खर्च किया जाता है, वह प्रदेश की अर्थव्यवस्था में सीधे लाभ पहुंचाता है। यहां पर्यटन की निरंतर बढ़ती संभावनाओं व पर्यटकों की बढ़ती संख्या के कारण आज पर्यटन ने उद्योग का रूप ले लिया है तथा इस उद्योग का आज प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महती स्थान है। सार्वजनिक एवं निजी दोनों ही क्षेत्रों में पर्यटन–विकास एवं पर्यटकों को आकर्शित करने के पुरजोर प्रयास किये जाने लगे हैं। जब पर्यटन ने एक उद्योग का रूप ले लिया है तो स्वाभाविक है कि इससे हजारों लोगों की रोजी–रोटी जुड़ी हुई है।[7]

संदर्भ

1. नेगी, जगमोहन. (1992). पयर्टन एवं यात्रा के सिद्धान्त. तक्षशिला प्रकाशनः नई दिल्ली. पृष्ठ **17—19, 20—21, 54—55, 132—155.**

2. पँवार, ललित के. (2001). भारतीय रेगिस्तान में पर्यावरणीय पर्यटन. राजस्थानी ग्रन्थागारः सोजती गेट, जोधपुर (राज0).
3. शर्मा, प्रो. के.के. (1989). राजस्थान में पर्यटन विकास. प्रगति प्रकाशनः जयपुर. पृष्ठ **43—44, 165—168.**
4. सरोज. (2008). पारिस्थितिकी पर्यटन में वर्तमान समय की आवश्यकता. ऋषि पब्लिकेशन्स।
5. सरल, मनमोहन., लल्ला, योगेन्द्र. (1961). साहस की कहानियां. आत्माराम एण्ड सन्सः नई दिल्ली. पृष्ठ **19—21.**
6. व्यास, राजेश कुमार. (2004). राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध. राजस्थानी ग्रन्थागारः जोधपुर (राज.). पृष्ठ **41—45, 59—63, 100—105.**
7. शर्मा, एच.एस., शर्मा, एम. (2013). राजस्थान का भूगोल. पंचशील प्रकाशनः जयपुर. पृष्ठ **8, 9, 317—340.**